खण्ड-क (गद्य, पद्य, आशुपाठ)

संस्कृत गद्य भारती

संस्कृत साहित्य पर एक दृष्टि

संस्कृत गद्य अनेक शताब्दियों से निरन्तर विकसित तथा परिष्कृत होता रहा है। संस्कृत में गद्य का प्राचीनतम् रूप 'कृष्णयजुर्वेद' में मिलता है। इस वेद की तैत्तिरीय संहिता, काठकसंहिता तथा मैत्रायणीसंहिता आदि का लगभग आधा भाग गद्य में ही है। इस गद्य में हमें एक विशिष्ट सारवत्ता, सौन्दर्य तथा मोहकता के दर्शन होते हैं। वाक्य छोटे, चुस्त तथा मुहावरेदार हैं। वाणी के पीछे अर्थ भागता हुआ-सा चलता है। समासों का सामान्य प्रयोग ही दृष्टिगोचर होता है। यह गद्य प्राञ्जल तथा प्रवाहपूर्ण है। कालक्रम में कुछ उतरकर अथर्ववेद का गद्य आता है। अथर्ववेद का लगभग छठा भाग गद्यात्मक ही है। इस प्रकार संस्कृत गद्य का प्रारम्भ वैदिक साहित्य के मन्त्रकाल में ही हुआ।

वैदिक साहित्य के ब्राह्मणकाल में गद्य पूर्णतया विचाराभिव्यक्ति का माध्यम बन गया। कृष्णयजुर्वेद का ब्राह्मण भाग तथा अन्य वेदों के ब्राह्मणग्रन्थ– ये सभी सरल, किन्तु सप्राण गद्य में विरचित हैं। ब्राह्मणग्रन्थों में पुराकथा से भी सम्बद्ध सामग्री मिलती है, जिससे उनकी गरिमा और भी बढ़ जाती है। इन पुराकथाओं का कालिदास जैसे परवर्ती महाकवियों ने अपने काव्यों में पूर्ण उपयोग किया।

उपनिषत्काल में गद्य का महत्त्व पद्यातिशायी हो जाता है। कठोपनिषद् आदि को छोड़कर प्रायः सभी प्रधान प्राचीन उपनिषदों की रचना गद्य में ही है। उपनिषदों की गद्यभाषा सरल, सहज एवं भावाभिव्यञ्जक है। अथ, इति, तत्, तथा आदि शब्दों का प्रयोग उसमें स्वाभाविकता की सृष्टि कर देता है। ह, वै, उ आदि अव्यय वाक्यालंकार के रूप में प्रयुक्त हुए हैं, जिनसे वाक्यों की कमनीयता बढ़ गयी है। सरल शैली तथा भव्य भावों का सामञ्जस्य हमें उपनिषदों की भाषा में मिलता है।

सूत्र-काल में संस्कृत गद्य में एक उल्लेखनीय परिवर्तन दिखलायी देता है। मन्त्रवाङ्मय की लयबद्ध संगीतमय गद्यभाषा तथा ब्राह्मण एवं उपनिषद् ग्रन्थों की सरल सहज भाषा में भावों की व्यञ्जना बड़े ही विशद तथा निर्मल ढंग से होती थी। शब्दों का प्रयोग अर्थ के सुस्पष्ट एवं विस्तृत प्रतिपादन के लिए किया जाता था, जिसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण वाक्यों की तथा कभी-कभी पूरे वाक्यसमुदायों की पुनरावृत्ति करनी पड़ती थी, किन्तु सूत्रवाङ्मय में शब्दलाघव का अभाव प्रधान रूप से दृष्टिगोचर होता है। यहाँ स्वल्पतम् शब्दों में अधिकतम अर्थ की अभिव्यक्ति ही ग्रन्थकारों का प्रमुख उद्देश्य है। शब्दलाघव की इस अतिशयता के फलस्वरूप शैली दुरूह एवं दुर्बोध हो गयी जिससे कभी-कभी सूत्रों के अनेक अर्थ निकाले जाने लगे।

सूत्रवाङ्मय की रचना का उद्देश्य उपलब्ध दीर्घकाय ग्रन्थों के सारभाग अथवा तात्पर्यों को सूत्रों में लिपिबद्ध करना था। प्रत्येक वैदिक शाखा अथवा चरण के कल्पसूत्र के दो विभाग-श्रौतसूत्र एवं गृह्यसूत्र संस्कृत गद्य की सूत्रशैली में ही सूत्रित हैं। श्रौतसूत्रों में वैदिक यज्ञप्रक्रिया का वर्णन है तथा गृह्यसूत्रों में गृह-परिवार के दैनन्दिन जीवन की धार्मिक विधियों एवं विवाहादि संस्कारों का प्रतिपादन है। कल्पसूत्र के तृतीय विभाग–धर्मसूत्रों में पद्यमिश्रित गद्य के दर्शन होते हैं। कालान्तर में भारतीय दर्शन के विविध प्रस्थान, वैदिक निर्वचन शास्त्र (यास्क का निरुक्त) तथा व्याकरणशास्त्र (पाणिनि की अष्टाध्यायी आदि) भी इसी सूत्रशैली में लिखे गये। कौटिल्य का अर्थशास्त्र भी प्रायः इसी शैली में लिखा गया जिसमें विषय-प्रतिपादन धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों की तुलना में कहीं अधिक शुद्ध है।

शास्त्रीय गद्य के साथ ही साथ एक अन्य प्रकार के गद्य का विकास हुआ, जिसे हम लौकिक संस्कृत एवं ब्राह्मणकालीन गद्य का संधिस्थल कह सकते हैं। महाभारत में कदाचित् और क्वचिद् इस प्रकार का गद्य परिलक्षित होता है। पतञ्जलि का महाभाष्य सरल तथा सुबोध व्यासशैली में लिखा गया है। महाभाष्य को पढ़ने से लगता है कि मानो उपाध्याय और अध्येता दोनों आमने-सामने बैठकर प्रश्नोत्तर-शैली द्वारा अभीष्ट शास्त्रीय प्रतिपादन कर रहे हों। यहीं जैन एवं बौद्ध ग्रन्थों में भावव्यञ्जना

की गद्यशैली का बहुल प्रयोग तत्कालीन जनता में गद्यभाषा के प्रचुर प्रचार का परिचायक है। यद्यपि इन ग्रन्थों की भाषा पालि और अर्धमागधी है, तथापि इनमें प्रयुक्त सरल वर्णनात्मक गद्य से यह लक्षित होता है कि कदाचित् संस्कृत में भी उसी प्रकार की सरल गद्य भाषा का प्रचार रहा होगा और इस प्रकार इन धार्मिक ग्रन्थों का प्रभाव संस्कृत गद्यशैली के विकास पर भी पड़ा होगा। कालान्तर में बौद्धों ने भी संस्कृत भाषा को अपनाया और 'ललितविस्तर' तथा 'दिव्यावदान' जैसे रमणीय गद्यग्रन्थों की रचना की, जिसमें बीच-बीच में पद्य का भी पुट है।

ऋग्वेद के उपवेद आयुर्वेद के उपलब्ध ग्रन्थों में चरकसंहिता प्राचीनतम् है जिसकी रचना गद्य में हुई है। यत्र-तत्र पद्य का भी प्रयोग मिलता है। चरक-संहिता में दर्शनसम्बन्धी अनेक विषयों की सूचनाओं के साथ अतिप्रौढ़ तथा उत्कृष्ट गद्यशैली भी दृष्टिगोचर होती है।

पालि, प्राकृत तथा संस्कृत के उत्कीर्ण अभिलेखों में हमें गद्य के रमणीय रूप का दर्शन होता है। ये अभिलेख हमें विविध ज्ञातव्य ऐतिहासिक सामग्री की सूचना देते हैं। पश्चिमी भारत के प्रसिद्ध क्षत्रप रुद्रदामन के गिरनार स्थित शिलालेख (150 ई0) को पढ़ने से पता चलता है कि उस समय तक अलंकृत गद्यशैली का पर्याप्त विकास हो चुका था। कविवर हरिषेण रचित समुद्रगुप्त की प्रशस्ति प्रयाग स्थित शिलालेख की गद्यभाषा से प्रतीत होता है कि उस समय तक गद्यशैली का एक निश्चित रूप निखर चुका था जिसमें दीर्घ समासयोजना, भाषालंकरण एवं कथानक की कमनीयता आदि गुण दिखायी देते हैं।

अभिजात गद्यकाव्य की उत्पत्ति के विषय में हमारा ज्ञान सीमित है जिसके आधार पर इसका उद्भव कब और कैसे हुआ, यह निश्चित रूप से कहना कठिन है। इस गद्यकाव्य का सर्वप्रथम विकसित रूप में दर्शन दण्डी, बाण और सुबन्धु की रचनाओं में होता है। इनके पूर्व के लेखकों तथा रचनाओं का इतिहास प्राय: अज्ञात-सा है। पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उस समय तक आख्यायिकाओं का निर्माण हो चुका था। दण्डी ने कथा और आख्यायिका में कुछ भेद बताये हैं, किन्तु अन्तत: उन्होंने भी स्वयं कह दिया कि कथा और आख्यायिका में कोई महत्त्वपूर्ण भेद नहीं है *(तत्कथाख्यायिकेत्येका जाति: संज्ञाद्वयाङ्किता)।*

दण्डी का 'दशकुमारचरित' अलङ्कृत गद्यभाषा का उत्कृष्ट निदर्शन है। बाण की कादम्बरी में समासों की सुदीर्घ छटा दिखायी देती है। श्लेष, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा एवं अतिशयोक्ति आदि अलंकार बाण की प्रतिभा के सामने सदैव हाथ जोड़े खड़े रहते थे। कादम्बरी में समासत्व की दृष्टि से तीन प्रकार की शैलियाँ– उत्कलिकाप्राय, चूर्णक एवं मुक्तक मिलती हैं। सुबन्धु की वासवदत्ता में श्लेषप्रयोग अपनी चरम अवसानभूमि में अधिष्ठित हो गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बाण के युग में ओजस्विनी समासों की शैली ने भाषा को पूर्णरूप से आच्छादित कर रखा था और फलत: यही गद्य का संजीवनतत्त्व माना जाता था *(ओज: समासभूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम् – काव्यादर्श)।* ऐसे ही युग में प्राचीन सूक्ति– ***'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'*** अक्षरश: कृतार्थ होती है।

शास्त्रीय गद्य के विषय में पहले ही कहा जा चुका है कि भारतीय दर्शन के सभी प्रस्थानों की आधारभूमि सूत्ररूप में ही प्रस्तुत कर दी गयी थी। अपने वर्तमान स्वरूप में विद्यमान 'सांख्यसूत्र' परवर्ती काल में निबद्ध हो सकते हैं, किन्तु न्याय, वैशेषिक, योग, मीमांसा और वेदान्त के सूत्रग्रन्थ पर्याप्त रूप से प्राचीनकाल की रचनाएँ हैं। मीमांसासूत्रों पर शाबरभाष्य, न्यायसूत्रों पर वात्स्यायनभाष्य एवं वेदान्तसूत्रों पर शाङ्करभाष्य अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। ये सभी भाष्यग्रन्थ लौकिक शास्त्रीय गद्य के नमूने हैं जिनकी गद्यशैली नितान्त पारिभाषिक तथा वैज्ञानिक है। न्यायशास्त्र के विख्यात आचार्य जयन्तभट्ट की 'न्यायमंजरी' न्यायदर्शन का प्रामाणिक ग्रन्थ है। प्राय: कादम्बरी आदि गद्यकाव्यों में भी नगण्यरूप में पद्यों का प्रयोग मिलता है, किन्तु चम्पू-काव्य में गद्य एवं पद्य का समान रूप से प्रयोग होता है।

शास्त्रीय गद्य के बाद साहित्यशास्त्रीय गद्य का प्रथम दर्शन हमें भरत के नाट्यशास्त्र में होता है। नाट्यशास्त्र के वार्तिकों, टीकाओं एवं अलङ्कारशास्त्र के कुछ ग्रन्थों में वृत्तियों एवं टीकाओं के रूप में गद्य का प्रयोग हुआ है। इस प्रकार राजशेखर के समय तक साहित्यशास्त्रीय गद्य भाषा का रूप प्रतिष्ठित हो चुका था। राजशेखर ने 'काव्यमीमांसा' में आचार्य कौटिल्य की शैली को अपनाया है। आचार्य कौटिल्य की भाँति ही राजशेखर ने पूर्ववर्ती आलङ्कारिकों के विचारों से अपना वैमत्य प्रकट करके अन्त में 'इति यायावरीय:' कहकर अपने मत का मण्डन किया है।

वर्तमान युग में भी ऐसे सर्वगुणमण्डित गद्यकाव्यों का प्रणयन हुआ है– इसी से सिद्ध होता है कि संस्कृतभारती की सर्जनाशक्ति का कोष **अक्षय्य** है और उसके उपासक सहृदय विद्वानों का उत्साह **अजय्य** है।

●

वैदिक मङ्लाचरणम्

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः।
सर्वशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

(यजुर्वेद-36/17)

काठिन्य निवारण

द्यौः = स्वर्ग। **आपः** = जल। **ओषधयः** = दवाइयाँ, **वनस्पतयः** = वनस्पतियाँ (पेड़-पौधे)। **विश्वेदेवा** = सम्पूर्ण विश्व के देवता।

अभ्यास प्रश्न

1. उपर्युक्त मन्त्र की ससन्दर्भ हिन्दी में व्याख्या कीजिए।
2. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ संस्कृत में लिखिए—
   (क) द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
   (ख) वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वशान्तिः। शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

यजुर्वेद के अन्य महत्त्वपूर्ण मन्त्रों को छात्र कंठस्थ करके लिखें।

●